

कमलेश्वर के कथा-साहित्य की भाषा-शैली

Narender Kumar^{1*} Dr. Govind Dwivedi²

¹ Research Scholar of OPJS University, Churu, Rajasthan

² Associate Professor, OPJS University, Churu, Rajasthan

सार - कमलेश्वर ने उपन्यास, कहानी, नाटक, संस्मरण, पटकथा विधाओं में लेखन किया।

दूरदर्शन के अतिरिक्त महानिदेशक के पद पर आसीन कमलेश्वर ने सारिका, दैनिक जागरण और दैनिक भास्कर जैसी कई पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया। साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत कमलेश्वर को भारत सरकार ने पद्म भूषण से भी सम्मानित किया।

कहानी-संग्रहों में जिंदा मुर्दे व वही बात, आगामी अतीत, डाक बंगला, काली आँधी।

उनके चर्चित उपन्यासों में कितने पाकिस्तान, डाक बँगला, समुद्र में खोया हुआ आदमी, एक और चंद्रकांता प्रमुख हैं।

उन्होंने आत्मकथा, यात्रा-वृत्तांत और संस्मरण भी लिखे हैं।

----- X -----

1. भाषा-शैली:

भाषा-शैली का उपन्यास साहित्य में अद्वितीय स्थान है। उपन्यास के सभी तत्वों को ठीक ढंग से संयोजित करने का कार्य भाषा-शैली के द्वारा ही सम्भव है। ऐसे तो भाषा और शैली को हम पृथक् नहीं कर सकते- “भाषा को यदि साहित्य का शरीर मानें तो शैली को उस शरीर की गर्दन मानना होगा।” [1] भाषा शैली के जरिए ही उपन्यासकार अपने विचार और भावनाओं को अभिव्यक्त करता है।

2. भाषा-शैली का महत्त्व:

कोई भी रचनाकार भाषा के माध्यम से अपनी रचना का शिल्प तैयार करता है और वह शिल्प पाठक को उस रचना से जोड़ता है। भाषा-शैली एक-दूसरे की पूरक होकर पाठक को उस उद्देश्य तक ले जाती है, जिसे लेखक रचना के पीछे रच रहा होता है। यदि भाषा-शैली आकर्षक है तो पाठक लेखक के उस उद्देश्य पहुँच सकता जो उसका मूल ध्येय है। यदि भाषा-शैली आकर्षक नहीं है तो पाठक उस रचना से कभी जुड़ नहीं पाएगा। ऐसे में उस रचना के पीछे लेखक का कितना ही बड़ा उद्देश्य क्यों न हो। पाठक उससे अपरिचित रह जाएगा। संक्षेप में, रचना वह आधार होती है,

जिसके माध्यम से लोक अपनी वैचारिक दुनिया में पाठकों को ले जाता है, लेकिन उन वैचारिकता का द्वार तभी पाठक के लिए खुलेगा जब वह रचना भाषा और शिल्प में पाठक को कहीं न कहीं बाँधती हो। [2]

इस दृष्टि से भाषा-शैली का बहुत बड़ा महत्त्व है। रचना की भाषा अपने माध्यम से उस वातावरण में पाठक को ले जाती है, जिस दुनिया की कहानी वह अपने पाठकों को सुनाना चाहता है। यदि वह भाषा उस वातावरण के प्रतिकूल हुई तो लेखक अपने पाठकों को सुनाना चाहता है। यदि वह भाषा उस वातावरण के प्रतिकूल हुई तो लेखक अपने पाठकों को उस दुनिया में ले ही नहीं जा पाएगा। इस तरह कथोपकथन की शैली पाठकों को ऐसी शैली लगनी चाहिए। जो उस वातावरण को बहुत तेजी से चित्रित करती चली जाए। यदि शैली लम्बे कथन के बावजूद उस वातावरण की सर्जना नहीं कर पाती तो पाठक उस रचना की जुड़ नहीं पाता। इस तरह रचना की शैली पाठक को लेखक की वैचारिक दुनिया में उतारने या उससे दूर ले जाने में समर्थ होती है।

3. भाषा-शैली की विशेषताएँ:

उपन्यास में जिज्ञासा और कौतूहल बनाये रखना भाषा-शैली का काम है। भाषा-शैली ही उपन्यास में स्वाभाविकता, रोचकता और मनोरंजकता बनाये रखती है। प्रेमचन्द जी के शब्दों में “रचना-शैली सजीव और प्रभावोत्पादक होनी चाहिए।... जनता उन्हीं उपन्यासों को आदर का स्थान है, जिनकी विशेषता उनकी गूढ़ता नहीं उनकी सरलता होती है।”[3]

हमारे लेखक ने अपनी रचनाओं में अलग-अलग शिल्प का प्रयोग करते हुए पाठक को शिल्प की एक विशाल दुनिया प्रदान की है। रचनाकार कभी प्रथम पुरुष को नायक बनाकर कहानी कहता हुआ स्वयं का भोगा हुआ यथार्थ कहने की प्रामाणिकता प्रस्तुत करता है तो कभी अन्य पुरुष में कहानी कहकर अपने निकटस्थ व्यक्ति के कथानायक होने का संकेत देता है और कभी वह अपने पात्रों को नाम देकर अपने आसपास की दुनिया चित्रित करने की विश्वनीयता पैदा करता है।

ठीक इसी तरह रचनाकार कभी सीधे रचना में कथोपकथन को महत्त्व देकर उसकी वैचारिकता पाठक पर छोड़ देता है कि वह इस कहानी से अपनी वैचारिकता भी देता चलता है। यह लेखक का विषय होता है कि वह अपनी रचना के लिए कौन-सी शैली अपनाए, लेकिन इतना तो तय है कि यह भाषा-शैली न विशेषताओं से अवश्य परिपूर्ण होनी चाहिए जो पाठक को लेखकीय उद्देश्य तक सुविधा से ले जाती है।

4. कमलेश्वर के उपन्यासों की भाषा:

कमलेश्वर आम आदमी के कथाकार हैं। उन्होंने देश और समाज के गहरे सन्दर्भों को अपनी रचनाशीलता से जोड़कर देखा है। उनकी भाषा-शैली को हम निम्नलिखित वर्गों में विभक्त कर सकते हैं।

जन भाषा: कमलेश्वर सामान्य जनता के कथाकार रहे हैं। एक और जहाँ उन्होंने कस्बों और महानगरों में रहने वाले मध्यवर्ग की दुनिया चित्रित की है। वही दुसरी और विभाजन का दर्द भोगते लोगों की कहानी कही है। उन्होंने व्यक्ति मन के आन्तरिक व्यापार की गुत्थियाँ सुलझाते हुए डॉक बंगला, समुद्र में खोया हुआ आदमी, तीसरा आदमी और वही बात जैसे उपन्यास दिये हैं।

स्पष्ट है कि उनके उपन्यासों में सामान्यजन की चिन्ता सर्वोपरि है। इसलिए कमलेश्वर ने भाषा के धरातल पर आम आदमी की भाषा का उपयोग किया है। जिसमें भारतीय भाषा में आने वाले वे सारे शब्द मौजूद हैं जो एक आदमी की बोलचाल में होते हैं। भले

ही वे शब्द हिन्दी व संस्कृत के न हो भले ही उनसे आदमी के नैतिक वातावरण को ठेस पहुँचती हो, भले ही वे तथाकथित हिन्दी भाषा के विरुद्ध आते हों। यदि आम आदमी के बीच वे व्यावहारिक हैं तो कमलेश्वर ने उनका खुलकर प्रयोग किया। उदाहरण के लिए ‘एक सड़क सत्तावन गलियाँ’ का यह उद्धरण हम देख सकते हैं- “भगवान किशन ने कलकी अवतार लिया ... दीन दुखियों की आरत पुकार सुनकर आखिर भगवान जी को अवतार लेना पड़ा। इसी तरह ‘रेगिस्तान’ का यह उदाहरण भी देख सकते हैं।

अरे नहीं बाकर.... मैं बिस्सुनाथ हूँ बिस्सुनाथ! उसने कहा था-कौन साला बिस्सुनाथ! कउन साला बिस्सुनाथ! अरे सुनो तो बाकर... चोप इस तरह कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों में जनभाषा की बोलचाल की भाषा को अपनाया।[4]

समाचार पत्रों की भाषा: कमलेश्वर अपने उपन्यासों में एक और जनभाषा का प्रयोग करते हैं। वे अपनी भूमिका के आरम्भिक वर्षों से ही पत्रकार रहे हैं। उन्होंने टाईम्स ऑफ इण्डिया से होते हुए कथा यात्रा तक सम्पादक में एक पत्रकार की लम्बी भूमिका निभाई है।

कमलेश्वर अपने उपन्यास में कहानी कहते हुए आपको कथा के उन बिन्दुओं पर बड़ी तेजी से ले जायेंगे। जो घटना की प्रमुखता से बयान करते हैं और अपनी बात कह चुकने के उपरान्त कमलेश्वर उस घटनाक्रम से अचानक दूसरी घटनाओं की ओर मुड़ जाएंगे जैसी पहली वाली घटना से उनका कुछ लेना-देना न हो। समाचार पत्रों में एक घटना के बारे में बताते हुए पत्रकार उस घटना के प्रमुख बिन्दुओं तक पाठक को ले जाते हैं और उस घटनाक्रम से परिचित कराकर वह पाठक पर ही यह निर्णय छोड़ देते हैं कि पाठक उसके बारे में सोचे-समझने और यह फैसला स्वयं करे कि किसके साथ न्याय हुआ और किसके साथ अन्याय? यह पाठक ही तय करेगा कि क्या हुआ और क्यों होना चाहिए?

कमलेश्वर अपने उपन्यासों में कुछ ऐसी शैली का प्रयोग करते हैं। उनके उपन्यासों में कथा का साहित्यिक रचाव बहुत कम देखने को मिलेगा। वे सीधे-सादे ढंग से अखबारी शैली में कहानी लिखते हैं- लेकिन उन्हें इतना अवश्य मालूम है कि उन्हें कितना कहना है, कैसे कहना है और किस मोड़ पर पहुँचकर इस घटना के बारे में मौन हो जाना है।

कमलेश्वर के उपन्यासों में भाषा शैली के निम्नलिखित उदाहरण देखे जा सकते हैं-

“बीच के कई बरस इस नशे में निकल गये। जग्गी बाबू भोपाल में जाकर गोल्डन सन के असिस्टेंट हो गये। फिर बढ़ते-बढ़ते मैनेजर हुए और वही रहने लगे। लिली पचमंडी में पढ़ती रही। उसे अपनी माँ से मिलने का मौका ही नहीं मिला और मालती जी चुनाव जीतती-जीतती एक दिन मिनीस्टर हो गयी।”[5]

इस उद्धरण में कथाकार यह बताता है कि मालती चुनाव जीतती-जीतती मिनीस्टर हो गयी। कमलेश्वर यह नहीं बताते कि उन्होंने कौन से चुनाव जीते... और उन चुनावों को जीतने के लिए उसने कितने पापड़ बेले? लेखक के लिए यह जरूरी नहीं कि यह सब पाठकों को बताएं क्योंकि वह कस्बे की दुनिया की निकली हुई एक औरत कैसे मिनीस्टर बन जाती है। कमलेश्वर यह भी जानते हैं कि मालती जी की असली कहानी वहाँ से शुरू होती है। जहाँ से वह मिनीस्टर हो जाती है। कमलेश्वर इस कथा-सूत्र पर अपने पाठकों को केन्द्रित करना चाहते हैं। इसलिए बीच के वर्ष बताना ये जरूरी नहीं समझते लेकिन जो भी बताते हैं, उसके पीछे कोई उलझाव नहीं है। एक सीधी-सादी भाषा है कि मालती जी चुनाव जीतते-जीतते मिनीस्टर हो गयीं।

अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग: कमलेश्वर ने आम जनता के बीच से भाषा का चुनाव किया है। इसलिए जनता की भाषा के वे सारे शब्द उनके उपन्यासों में हमें जगह-जगह दिखाई देते हैं। जो जनता में प्रचलित हैं। इसमें हिन्दी के अतिरिक्त उर्दू, अरबी-फारसी के शब्दों की भरमार मिल जाएगी जो जनता में भारी संख्या में इस तरह घुलमिल गये हैं कि उन्हें पहचानना मुश्किल है कि वे हिन्दी के शब्द हैं या किसी अन्य भाषा के और क्योंकि वे जनता के बीच सुविधा से बोले जाते हैं। इसलिए कमलेश्वर ने इसका प्रयोग अपने उपन्यासों में सहजता से किया है। उदाहरण के लिए - मजहब परस्त, फिरकापरस्त, तब्दील, आवाम, रोजमर्रा, जज़्बात, गुकद में, नामुमकिन, बेहाल, बदबूदार, शहादत, माजरा, हाकिम, काबिल ‘एक सड़क सत्तावन गलियाँ’।

नासूर गोरत, डाकखाना, इंतकाम, साजिशें, मौलवी, दक्किन, जग, हुकूमत, गलतफही, तामीर, मुल्क, शिरकत, तकसीम, नाइतफाकी, जानाबेआली, सिपहसलार, ‘लौटे हुए मुसाफिर’। बहस, इंतजाम, दास्तान, खामाखवाह, ताज्जुब, नब्ज, नेस्तनाबुद, मौजूद, तास्सुबी, मुल्क, गारत, फिराक, परस्ती, मौकापरस्त, दरयाफ्त उपन्यास ‘कॉली आँधी’[6] कमलेश्वर भाषा की खोज करने के लिए न तो उर्दू की ओर गये और न ही अरबी फारसी की। उन्होंने अपनी भाषा जनता के बीच की चुनी है।

जनता जिस सहजता से भाषा का प्रयोग करती है उसी सहजता और सहजता से कमलेश्वर ने किया है। कहीं भी बनावटी भाषा का प्रयोग किया।[7]

5. कमलेश्वर के उपन्यासों का शैली पक्ष:

कमलेश्वर के उपन्यासों में शैली उनके कथानक का बहुत बड़ा आधार है। इस शैली के विभिन्न रूप कमलेश्वर के कथानकों में उभरकर सामने आए हैं, उनके उपन्यासों में प्रयुक्त कुछ शैलियों का अवलोकन हम करेंगे।

वर्णनात्मक शैली: हिन्दी उपन्यास में वर्णात्मक शैली का व्यापक प्रयोग पाया है। इसके द्वारा उपन्यास में जीवन के विस्तृत क्षेत्र का चित्रण विवरण रूप में प्रस्तुत किया है। इस शैली में लेखक जीवन के किसी भी क्षेत्र को अपनी कथा का माध्यम बना सकता है। इससे घटनाओं का बाहुल्य, पात्रों का आधिक्य, लम्बे संवाद आदि अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है। इसमें पात्रों को अन्तर्द्वन्द्व चित्रण की आवश्यकता नहीं होती। लेखक एवं अपनी ओर से वर्णन करता है।

“इस शैली में उपन्यासकार उपन्यास के चरित्रों उनसे सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन अपनी कल्पना, अनुभूति और जानकारी के आधार पर करता है। कमलेश्वर अपने पात्रों की कहानी एवं वर्णन की शैली में कहते चलते हैं। वह स्वयं ही बताते हैं कि कौन सी घटना कब घटी? जैसे ‘काली आँधी’ की मालती जी किस तरह सफलता के शिखर पर पहुँची उसके बारे में स्वयं कहते हैं और यह क्रम जो चला तो रुकने को नहीं आया। सफलता मालती जी के कदम चूमते चली गयी। आवाज गूँजती गयी। एक चुनाव से दूसरे चुनाव तक चुंगी की मैम्बरी से पार्लियामेन्ट के चुनाव तक।

यहाँ मालती जी के बारे में लेखक स्वयं ही बताते चले जाते हैं कि वह किस तरह आगे ही आगे ही बढ़ती चली गयी।

इसी भाँति कमलेश्वर ने ‘आगामी अतीत’, ‘डाक बंगला’, ‘समुद्र में खोया हुआ आदमी’, ‘कितने पाकिस्तान’ आदि में वर्णात्मक शैली का बखूबी वर्णन किया है।

आत्मकथात्मक शैली: इस शैली में लिखे गये उपन्यासों में एक पात्र की ओर से सम्पूर्ण कथा कही जाती है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि वह पात्र उपन्यासकार के दृष्टिकोण

एवं मान्यताओं आदि का प्रतिनिधि है। कमलेश्वर अपने कई उपन्यासों में आत्मकथा की शैली में कहानी कहते चलते हैं। जैसे 'डाक बंगला'। इस उपन्यास का आरम्भ लेखक इस ढंग से करते हैं- आज भी जब मैं इरा के बारे में सोचता हूँ तो उसकी सूरत शकल से ज्यादा मुझे मेजर, सोलंकी, बतरा, डॉक्टर और बिमल आदि याद आते हैं।

-कही बार मैंने कोशिश की कि इस बात को जो रह-रहकर मेरे दिल में घुमड़ जाती है। कहानी के रूप में लिख डालूँ पर पिछले तीन साल से कोशिश करते रहने के बावजूद नहीं लिख पाया। आज इसे लिखने बैठा हूँ।

तब भी इस बात का यकीन नहीं है कि इसे पूरा ही कर पाऊँगा, क्योंकि बहुत सोचने के बाद भी मैं किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सका, न मैं इरा को ही पहचान सका। यहाँ 'डाक बंगला' का मैं लगातार इस बात की पुष्टि करता हूँ कि जैसे कमलेश्वर ने यह जिन्दगी स्वयं जी हो और उसे वे उपन्यास का रूप दे रहे हो। लगता है जैसे यह स्वयं उनकी स्वयं की कहानी है। जिसमें मेजर सोलंकी, बतरा, डॉक्टर, इरा और विमल जैसे पात्र शामिल हैं। कमलेश्वर यह भी कहते हैं। यह कहानी पिछले कही वर्षों से वह लिखना चाह रहे थे, लेकिन यह सम्भव नहीं हो रहा था।

इसी तरह काली आँधी का मैं सब कुछ तटस्थ ढंग से देखता हूँ और कथा के अन्त में मालती जी जग्गी बाबू की स्थिति का ब्यान करते हुए निरुत्तर खड़ी थी।[8]

भावात्मक शैली: कमलेश्वर एक कुशल पत्रकार रहे और उन्होंने कस्बे से लेकर नगरों, महानगरों तक की जिंदगी की अच्छी तरह देखा और समझा है। उन्हें अच्छी तरह पता है कि आज की छल प्रपंच और युद्धरत जिन्दगी में भावुकता को कहीं कोई स्थान नहीं है। इस दौर में होने वाला हर व्यक्ति हर जगह मारा जायेगा।

इसे हम 'लौटे हुए मुसाफिर' में देख सकते हैं। इस उपन्यास की नायिका नशीबन पूरे उपन्यास में भावात्मक स्तर पर जीती है। दंगों के दौरान भी वह जाति-पाँति से ऊपर उठकर अपनी भावात्मक का परिचय देती है। उसके दिल में किसी के प्रति नफरत नहीं है। सेवा-प्रेम ही उसके जीवन का मकसद है। तभी तो वह बच्चन के बेटों को अपने घर रखती है। और अनेक विरोधों के बावजूद भी उसे अलग नहीं करती। उससे किसी का दुख नहीं देखा जाता, बच्चन के बेटे रमुआ की हड्डी टूटने पर पूरी रात वहाँ बैठती है-

"रात भर नशीबन वहीं रमुआ के बिस्तर के पास बैठी रही। बच्चन ने कहा कि कुछ देर सो ले, पर वह नहीं हटी, मरद नहीं समझ

बाल-बच्चों का दुख-सुख।[9] इसी तरह वह सलमा और सलार के प्रेम की भी समर्थक और उससे जितनी बन सके, उतनी मदद करती है।

इसी भाँति 'कितने पाकिस्तान' में वह स्थिति देखी जा सकती है। इसमें अदीब, बूटा सिंह, कबीर आदि के जरिए लेखक ने अपनी भावनाओं को भावात्मक शैली के द्वारा अभिव्यक्त किया है।

व्यंग्यात्मक शैली: कमलेश्वर मूलतः संवेदना के कथाकार हैं और मनुष्य की करुणा हो उनका अन्तिम विषय रही है। फिर भी उनके उपन्यासों में व्यंग्य का पक्ष जगह-जगह पर उभरता दिखाई देता है। कमलेश्वर ने राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक आदि विषयों पर करारा व्यंग्य किया है। वास्तव में करुणा जब संवेदना के शिखर पर पहुँचती है तो मनुष्य अपने आप व्यंग्यात्मक हो उठता है। 'काली आँधी' के लल्लू बाबू मालती जी की छाया बनकर उनके साथ है, लेकिन उनके रहन सहन और व्यवहार की शैली पर लेखक जगह-जगह व्यंग्यात्मक टिप्पणी करता चलता है। राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार पर भी लेखक ने करारा व्यंग्य किया है। मालती जी अपने चुनावी भाषण में कहती हैं कि गाँव जैसी ईमानदारी शहरों में नहीं है। शहरों में चपरासी से लेकर बाबू तक सब पैसा लेकर ही काम करते हैं। वह आगे कहती हैं-जगह-जगह ऐसे भ्रष्टाचारी लोग हैं, हम उन्हें खत्म करना चाहते हैं। देखिए पाँचों अंगुलियाँ बराबर नहीं होती, कहते हुए मालती जी ने अपना हाथ उठाकर बात समझाई।

"जबमालती जी का हाथ उठा हुआ ही था कि भीड़ में से एक बूढ़ा पागल-सा आदमी उठकर चीखा- इलकाब जिन्दाबाद। और नारा लगाने के बाद उसने कौर पकड़ने की तरह अंगुलियों को मिलाया और वही से मालती जी से बोला- पर देखो, खाते बखत सब बरोबर हो जाती है और वह बूढ़ा पागल-सा आदमी अपनी अंगुलियों को मिलाए भीड़ को दिखाता रहा- हाँ ऐसे खाते बखत बरोबर हो जाती है।[10]

यहाँ लेखक यह बताना चाहता है कि राजनीति में अलग-अलग पक्ष अलग-अलग पार्टियाँ भ्रष्टाचार में आपस में मिल जाती है।

6. कमलेश्वर की कहानियों की भाषा:

भाषा शैली का कथा-साहित्य में अद्वितीय योगदान है। कहानी के सभी तत्वों का ठीक ढंग से समायोजित करने का कार्य भाषा शैली के द्वारा के द्वारा ही सम्भव है। ऐसे तो भाषा एवं शैली को हम अलग नहीं कर सकते- "यदि भाषा को साहित्य का शरीर माने तो शैली को उस शरीर की गर्दन मानना होगा।" कोई भी रचनाकार भाषा के माध्यम से अपनी रचना का शिल्प तैयार

करता और वह शिल्प पाठक को उस रचना से जोड़ता है। भाषा शैली एक-दुसरे की पुरक होकर पाठक को उस उद्देश्य तक ले जाती है। जिसे लेखक रचना के पीछे रच रहा होता है। यदि भाषा आकर्षक है तो पाठक लेखक के उस उद्देश्य तक पहुँच सकता है। संक्षेप में रचना वह होती है, जिसके माध्यम से लेखक अपनी वैचारिक दुनियाँ में पाठकों को ले जाता है। इस दृष्टि से भाषा एवं शैली का विशेष महत्त्व है। रचना की भाषा अपने-अपने माध्यम से उस वातावरण में पाठकों को ले जाती है। जिस दुनिया की कहानी वह अपने पाठकों को सुनना चाहता है।

भाषा शैली की विशेषताएँ:

कहानी में जिज्ञासा एवं कौतुहल बनाये रखना भाषा-शैली का काम है। भाषा शैली ही कहानी में स्वाभाविकता, रोचकता और मनोरंजकता बनाये रखती है। प्रेमचन्द के शब्दों में रचना शैली सजीव और प्रभावोत्पादक होनी चाहिए।[11]

कमलेश्वर आम आदमी के कथाकार हैं, उन्होंने देश और समाज के गहरे सन्दर्भों को अपनी रचनाशीलता से जोड़कर देखा है। उनकी भाषा एवं शैली को हम निम्नलिखित वर्गों में बाँट सकते हैं।

जनभाषा, समाचार पत्रों की भाषा, साहित्यिक परिष्कृत भाषा, अरबी फारसी शब्दों का प्रयोग

जनभाषा: कमलेश्वर सामान्य जनता के कथाकार रहे हैं। एक जहाँ उन्होंने कस्बों और महानगरों में रहने वाले मध्यम वर्ग की दुनिया चित्रित की है। इसलिए कमलेश्वर ने भाषा के धरातल पर आम आदमी की भाषा का प्रयोग किया है, जिसमें भारतीय भाषा में आने वाले वे सारे शब्द मौजूद हैं जो एक आदमी की बोल चाल में होते हैं। भले ही शुद्ध हिन्दी वह संस्कृत के शब्द न हो, भले हो, उनसे आदमी के नैतिक वातावरण को ठेस पहुँचती हो।

साहित्यिक परिष्कृत भाषा: कमलेश्वर पत्रकार जरूर रहे हैं, मगर पत्रकारिता से अधिक महत्त्व वह लेखन को देते हैं। उन्हीं के शब्दों में- 'नन्दन, तुमने मुझे इलाहाबाद के दिनों से जाना है। अपना लेखन मेरी पहली प्राथमिकता 'सारिका' मेरी उससे गहरी जुड़ी दूसरी प्राथमिकता है। मेरे दोस्त मेरी तीसरी प्राथमिकता है और मैं अपनी प्राथमिकताओं में कोई घालमेल नहीं होने देता लेकिन अगर नौकरी मेरे लेखन में बाधक होगी तो प्यारे, मैं नौकरी छोड़ दूँगा। अतः स्पष्ट है कि पत्रकारिता की दुनिया में भी उन्होंने साहित्यिक पत्रकारिता की है। वे 'नई कहानी' और

'सारिका' से लेकर 'कथा यात्रा' तक के सम्पादन में साहित्यिक पत्रिका से जुड़े रहे हैं। इसलिए भले ही उनके कथानक की शैली पत्रकार की शैली है। वे उस शैली का उपयोग साहित्य रचना में करते हैं और पाठक को कहीं भी अनुभव नहीं होने देते कि ये पत्रकार साहित्य की दुनिया में अनाधिकार प्रवेश कर रहा है।

7. कमलेश्वर की कहानियों का शैली पक्ष:

कमलेश्वर की कहानियों में शैली पक्ष उनके कथानक का बहुत बड़ा आधार रही है। इस शैली के विभिन्न रूप कमलेश्वर के कथानकों में उभरकर सामने आए हैं। उनके उपन्यासों में प्रयुक्त शैलियों का अवलोकन हम करेंगे।

वर्णनात्मक शैली: हिन्दी कहानी में वर्णनात्मक शैली का व्यापक प्रयोग पाया जाता है। इसके द्वारा उपन्यास में जीवन के विस्तृत क्षेत्र का चित्रण विवरण रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस शैली में लेखक जीवन के किसी भी क्षेत्र को अपनी कथा का माध्यम बना सकता है। इससे घटनाओं का बाहुल्य, पात्रों का आधिक्य, लम्बे संवाद आदि अनेक समस्याओं का समाधान हो सकता है। लेखक स्वयं अपनी ओर से वर्णन करता है- इस शैली में लेखक ने कहानी के चरित्रों और उससे सम्बन्धित घटनाओं का वर्णन अपनी कल्पना, अनुभूति और जानकारी के आधार पर करता है।

आत्मकथात्मक शैली: कमलेश्वर ने अपने कथा साहित्य में आत्मकथात्मक शैली का भी प्रयोग किया है। आत्मकथात्मक शैली में लेखक सम्पूर्ण कथा का विस्तार एक पात्र के माध्यम से करता है। कोई भी लेखक अपनी जिन्दगी को लेखन का विषय नहीं बनाता और यदि बनाता भी है तो पीछे यह दावा नहीं करता कि यह उसकी जिन्दगी का हिस्सा है। आत्मकथात्मक ढंग से कहानी कहने की और कमलेश्वर ने इस शैली का प्रयोग किया।[12]

भावात्मक शैली: कमलेश्वर एक कुशल पत्रकार हैं। उन्होंने कस्बे से लेकर नगरों, महानगरों तक की जिन्दगी को अच्छी तरह देखा और समझा। उन्हें तरह पता है कि आज की छल प्रपंच और युद्धरत जिन्दगी में भावुकता को कहीं कोई स्थान नहीं है। इस दौर में होने वाला व्यक्ति हर जगह मारा जायेगा।

लेकिन कमलेश्वर यह भी जानते हैं कि मनुष्य तभी मनुष्य है जब तक वह संवेदनशील और भावुक है। इस भावुकता और संवेदना को हटा दे तो वह मनुष्य नहीं नर पिशाच हो जाएगा।

आज हमारी दुनिया का जो परिणाम हो रहा है। वह इसलिए कि मनुष्य बड़ी तेजी से भावात्मकता और संवेदना से शून्य होता जा रहा है। कमलेश्वर अपनी भावात्मक शैली के द्वारा आज के मनुष्य को उन संवेदनाओं में लौटा ले जाना चाहते हैं, जहाँ वह मनुष्य बनकर मनुष्य मात्र के लिए जी सके।[13]

व्यंग्यात्मक शैली: कमलेश्वर मूलतः संवेदना के कथाकार हैं और मनुष्य की करुणा ही उनका अंतिम विषय रही है। फिर भी उनके कहानी में व्यंग्य का पक्ष जगह-जगह पर उभरता दिखाई देता है। कमलेश्वर ने राजनीतिक, धार्मिक, साहित्यिक आदि विषयों पर करारा व्यंग्य किया है। वास्तव में करुणा जब संवेदना के शिखर पर पहुँचती है तो मनुष्य अपने आप व्यंग्यात्मक हो उठता है। 'काली आँधी' के लल्लू बाबू मालती जी की छाया बनकर उनके साथ है लेकिन उनके रहन-सहन और व्यवहार की शैली पर लेखक जगह-जगह व्यंग्यात्मक टिप्पणी करता चलता है। कमलेश्वर की 'जार्ज पंचम की नाक' कहानी में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।[14]

संदर्भ सूची:

1. विपिन कुमार, उपन्यासकार शिवानी: व्यक्तित्व एवं कृतित्व, पृ. 254
2. वही, पृ. 255
3. कमलेश्वर, एक सड़क सत्तावन गलियाँ, पृ. 46-50
4. कमलेश्वर, काली आँधी, पृ. 14
5. कमलेश्वर, काली आँधी, पृ. 119
6. कमलेश्वर, संवेदना और शिल्प, पृ. 70
7. कमलेश्वर, डाक बंगला, पृ. 5
8. कमलेश्वर, काली आँधी, पृ. 123
9. कमलेश्वर, लौटे हुए मुसाफिर, पृ. 78-79
10. कमलेश्वर, कितने पाकिस्तान, पृ. 74
11. डॉ. लक्ष्मीकांत सिन्हा, हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास, पृ. 122
12. कमलेश्वर, समग्र कहानियाँ, पृ. 253
13. वही, पृ. 257

14. कमलेश्वर, समग्र कहानियाँ, पृ. 288

Corresponding Author

Narender Kumar*

Research Scholar of OPJS University, Churu, Rajasthan